जीऊता

बनारस मे उदय प्रताप कॉलेज के एग्रिकल्चर फार्म से लगा एक गॉव होता था. नरायनपुर. जो शायद आज भी होगा। आज से बीस वर्ष पहले इस गॉव मे एक पक्के लॉज के अलावे एक और पक्का मकान किसी बी डी ओ साहब का बन रहा था। गॉव के बाकी सारे मकान कच्चे थे. जिनमे कुछ पर खपरैल थे या फिर सूखे पुआलों की छतें थी। पूरे गॉव के रास्ते भी कच्चे थे। गॉव मे बिजली आ चुकी थी. पर लॉज के अलावे दूसरे घरों मे लालटेने या ढिबरियॉ ही टिमटिमाती रहती थीं।

मुझे ऐसा लगता था कि इस गॉव को समीपवर्त्ती गॉवों के बड़े बड़े काश्तकारों ने अपनी थोड़ी बहुत जमीने देकर अपने मजूरों के लिए बसाया था। उन्हे क्या पता था कि एक दिन बनारस शहर अपना विस्तार करते करते इस गॉव से लग जाएगा। अपनी समझ से उन्होने इन मजूरों को अपने गॉवों से बाहर बसाया था और अब ये हाल था कि नरायनपुर समय के साथ उदय प्रताप कॉलेज से ही नही. भोजूबीर. अर्दली बाजार कचहरी तक से जा लगा था और इन काश्तकारों के गॉव शहर से कट चले थे. जहॉ धूँधलका छाते ही बसें तो दूर एक गदहागाड़ी तक न जाती थी। धीरे धीरे मै देख रहा था कि इस गॉव के लोग अपनी सीमित जमीनों मे कोई न कोई सब्जी पैदा करके उन्हे अपने ठेलागाड़ी मे सजा कर अर्दली बाजार या कचहरी के सामने खड़े हो जाते थे। इनमे ज्यादेतर कम उम्र के ही होते थे। ढले उम्र की पीढी को काश्तकारों ने थोड़ा बहुत कर्ज देकर सूद के मजबूत पंजे मे ऐसा फंसा रखा था कि उनके सामने दूसरा कोई विकल्प ही न था। उन्हे अपनी सुबह की राह दूर दराज के गॉवों तक ही लेनी पड़ती थी।

उन दिनो मुझे इस गॉव की एक बात बड़ी भाती थी। सुबह से लेकर शाम तक यहॉ का ऐसा कोई भी बरामदा न था. जहॉ छोटी बच्चियों से लेकर अधेड़ उम्र की औरतें तक मालाएं गूॅथतीं नजर न आती हों। सबके सामने रंग बिरंगी मोतियों से भरी सूपें होतीं और हर बरामदे मे एक बॉस की अरगनी होती .जो देखते देखते पच्चासों सैकड़ों मालाओं से भर जाती थीं। इन्हे सारे सामान विश्वनाथ गली के बनियों से मिलते थे. मोतियों से लेकर धागे तक और हर माले पर पैसों मे मजूरी मिलती थी. पर इनके गूॅथे माले विदेशों तक भेजे जाते थे।

एक दिन अचानक मेरी नजर यही कोई बारह तेरह वर्ष की लड़की पर पड़ी. जो अपने कच्चे घर के छोटे से बरामदे मे अकेली बैठी मालायें गूॅथ रही थी। उसका रंग भी बड़ा साफ था। गोरे गोरे पतले बॉह. लम्बी लम्बी उॅगलिया. बार्डर वाला ब्लाउज और पैर तक लम्बे घाघरे पहने वो अपना सर झुकाये अपने काम मे लगन थी। उसके धूले लम्बे घूॅघराले बाल. जो उसके कमर तक आते थे. वो शायद उन्हे सूखा भी रही थी। उसकी नाक रह रह कर बहती थी जिसे वो बिना सर उठाये अपने ब्लाउज के बॉह से पोंछ लिया करती थी। अपना तैयार माला वो अपनी बॅसहटी के गोड़े से लटका देती थी। नरायनपुर के कींचड़ मे बस वो ही एक कमल थी. जिसे देख कर मेरे दिमाग मे बस दो ही ख्याल आए। या तो ये किसी ऊॅचें जात की अनाथ लड़की है. या फिर कोई ठाकुर या बाम्हन अपने पिछवाड़े नीम की दतुअन चुभलाते थोड़ा दूर तक घूम टहर आया है।

इस गॉव से मेरा परिचय बाबुल नाथ तिवारी ने करवाया। वो मिर्जापुर का रहने वाला था। वो बी एस सी मे मेरे साथ ही पढता था। नरायनपुर मे दूसरा पक्का मकान जो किसी बी डी ओ साहब का बन रहा था. वो दूर के रिश्ते मे उसके चाचा लगते थे और अपने तबादले की वजह से मकान मे होने वाले कामों की देख रेख न कर पाते थे। बाबुलनाथ उनके बनते मकान के एक कमरे मे मुफ्त मे रहता था और मकान मे होने वाले कामों की देखभाल करता था। पहनने को वो धोती कुर्त्ता पहनता था. पर घूमना फिरना उसका राजदूत मोटर सायकल पर ही होता था जो उसे अपनी दहेज मे मिला था। बनारस मे वो दो चार घरों मे टयूशन भी देने जाता था और दो ढाई सौ रूपये पैदा कर लाता था। दलाली तो उसके खून मे ही थी। बनारस वो सिर्फ बी एस सी करने न आया था. बल्कि पैसा भी जोड़ने आया था और जोड़े जा रहा था। अपनी लन्द फन्द से उसे फुर्सत ही न थी. फिर भी शाम का खाना वो अपने हॅाथों ही बनाता था। वो कहता भी था. इन टुसनियो मे बच्चों के मॅा बाप सर पर समोसा और चाय लेकर मुझसे गिड़गिड़ाते रहते हैं. तिवारी जी!हमारे बच्चों मे आप अपना गियान बॉटने मे कोताही न कीजिएगा। कोई भी दिन ऐसा न होगा. जब क्लास के बाद मुझे दस से बारह समोसे खाने को न मिलते हों। पेट तो भर जाता है. पर मै अपनी आत्मा का क्या करूॅ!बाम्हन का पेट है बिना चावल दाल और चोखे के भरता ही नही है। दिन भर बुड़बुड़ाकर गरियाता रहता है। फिर कौन सा गियान मै बाटूॅ!ठेलठाल कर तीसरी बार में इन्टर निकाला हूॅ। बच्चों से पैर छूवाने मे सरम आती है। बस ये सब तुलसी दास का कमाल है। तुम्हे शायद पता न हो. पर अगले का राम चरित मानस बाम्हनो के लिए हाउ टू अर्न मनि वाली विद्दा है। तुम लोगों को वो नैतिक मूल्य थोक के भाव से सौंप गया और हम जाहिलों को पैसा कमाने के सारे गुर सीखा गया। विद्दा हमारे हॉथ मे. शक्ति और दौलत तुम लोगों के हाथ मे। बाम्हनो की पिढियों मे इतना व्यवहारिक प्रतिनिधि दूसरा कोई आया ही नही।

बाबुलनाथ के जरिये ही मेरा परिचय नरायनपुर के लॉज मे रहने वाले लड़कों से हुआ. जो बिहार के अलग अलग अंचलों से आये हुए थे। इनमे ज्यादे क्षत्रिय परिवार के थे या ब्राम्हण थे और उदय प्रताप कॉलेज मे पढते थे। इस लॉज के सामने एक मिट्टी की ही झोपड़ी थी. जिसके खपरैल बिल्कुल काले हो चले थे। दो छोटी खिड़कियॉ भी थी. इस झोपड़ी में। दरवाजे की कुंडी पर एक भारी भरकम ताला लटक रहा था।

ये झोपड़ी जीऊत की थी. जो लॉज मे रहने वाले आठ लड़कों के लिए दो वक्त का खाना बनाता था। उसे हर लड़कों से महीने के सौ रूपये मिलते थे। एक दिन दोपहर का खाना मै भी वहॉ खाया। लिपे पुते जमीन पर बोरी पर बैठके। एक कोने मे जीऊत लकड़ी की आग पर रोटियॉ सेके जा रहा था। चूल्हे के बगल मे जमीन पर जली लकड़ियॉ बिखरी पड़ी थीं. जिनपर तीन पीतल के बड़े बड़े बटलोहिये रखे हुए थे। उनसे भाफें निकल रही थीं। जली लकड़ियों की आग अभी तक बुझी न थीं। इस आग पर भैंस के घी से भरा एक कटोरा भी चढा था. जो रह रह कर कड़कड़ता रहता था। मेरे साथ लॉज के तीन और लड़के खाने पर बैठे थे। आठ दस रोटियॉ सेकने के बाद वो हमे खाना देने उठा। फूल की बड़ी बड़ी थालियों मे उसने आलू गोभी और टमाटर की सूखी सब्जी परोसी. कटोरे मे भर के मटर का दाल डाला. ऊपर से भैस का कड़कड़ाता घी। फिर हर थाली मे एक एक रोटी डालकर हमारे सामने रख गया। इस झोपड़ी के दूसरे कोने मे एक बड़ा सा घड़ा पानी से लबालब भरा पड़ा था। इस घड़े का ठंढा पानी वो चार रंग बिरंगे लोटो मे भर कर हमे देने बस एक बार और उठा फिर वो अपनी रोटियॉ सेकने मे व्यस्त हो गया। अपनी रोटियॉ वो रोटियों से ही सेकता था। उसके चूल्हे की दूरी हमसे ज्यादे दूर न थी. इसलिए उसे बार बार उठना न पड़ता था। मॉ की तरह पूछ पूछ कर वो हमे खिलाता रहा। भईया के

अलावे उसके पास दूसरा कोई सम्बोधन था ही नही। बड़ा स्वाद था उसकी हॉथों मे। मेरा पेट तो दो रोटियों से ही भर चला था. पर लॉज के दूसरे लड़के डट कर खाये जा रहे थे। जीऊत जगह और बर्त्तन की कमी की वजह से एक साथ सिर्फ चार लड़कों को ही खिला पाता था। मेरे खाने पर से उठते ही वो मेरे बर्त्तन झट पट लॉज के चांपे कल पर मॅाज आया और लॉज के एक लड़के को आवाज लगा आया।

मै उदय प्रताप कॉलेज के न्यू हॅास्टल के कमरा नम्बर दो मे रहता था। इस हॅास्टल मे तकरीबन दो सौ लड़के रहते थे। यहॅा दो मेसे थीं जिनके खाने बुरे तो न थे. पर खाने पर बड़ी भींड़ मचती थी। एक साथ बीस लड़के बैठ कर खाना खाते थे। खाना बनने से पहले ही मेसों मे लाईने लग जाती थीं। ऐसा कोई भी दिन न था कि मेसों के महाराजों को माधरचोद और भोंसड़ी वाले सुनने को न मिलता हो। गॅावों से आये कसरती लड़के दिन भर अपने गॅावों से लाये चना चबेना फॅाकते रहते थे. पर मेसों की आग सुलगी नही कि इनके पेटों की आग सुलग पड़ती थी। खा खाके साले हॅास्टल का संडास पाट डाले थे। कई तो एक पाई तक न देते थे. अपनी रंगदारी का खाते थे। जब मेसों के महाराज इनसे पैसे मॅागने आते थे तो इनका बस एक ही जवाब होता थाःका हो पंडित बनारस मे रहै क ह कि ना! बेचारे महाराज दॅात चियारे उन्हे आशीर्वाद देकर उल्टे पांव वापस लौट जाते थे।

मै अपने मेस का हिसाब किताब चुकाया और जीऊत के सामने हॅाथ जोड़कर खड़ा हो गयाःजीऊत !मुझे भी दो वक्त रोटी दाल खिला दिया करो।

ये एक तरह से मेरा उससे पहला परिचय था।

उसकी उम्र यही कोई तीस वर्ष के आसपास की रही होगी। वो दिलदार नगर के एक छोटे से गॅाव का रहने वाला था और जात का गोंड़ था। तभी उसे लोग जीऊत न कहकर जीऊता कहते थे। वो शादीसुदा था. पर अभी तक निःसंतान था। उसकी पत्नी गॅाव मे ही रहती थी और एक काश्तकार के खेतों पर काम करती थी। रब्बी और भदई के फसलों की कटाई के बाद जब खेतों पर काम न होते थे तो वो काश्तकार साहब के घर का ऊपरी काम सम्हालती थी. अनाज कूटना छॅाटना. मसाला पीसना. पानी भरना. कपड़े लत्ते कचारना इत्यादि। उसे अपनी मजूरी अनाजों मे मिलती थी. जिसकी उसे कोई जरूरत न थी। वो अपनी सारी मजूरी बनारस पहॅुचा देती थी और बदले मे जीऊत उसके लिए साड़ी ब्लाउज. चूड़ी टिकुली या इसी तरह के सामान खरीदे रहता था। जब वो बनारस आती थी तो एक रात ठहर कर दूसरे दिन की पहली बस लेकर फिर अपने गॅाव लौट जाती थी।

जीऊत के पास कपड़े लत्ते के नाम पर एक हरे चारखाने की लुंगी. एक पूरे बॅाह की कमीज. एक फटी बनियाइन. एक चादर और एक भेड़ो की काली कम्बल मात्र थी। कन्घी तेल जूते चप्पल साबुन मंजन तो मुझे कहीं भी नजर न आया. बक्सा बुक्सा तो दूर रहा। अब तक मैने उसकी पत्नी को न देखा था।

एक बार मै उसे अपने गॅाव ले गया और अपनी चाची से उसे तमाम बर्त्तन भी दिलवा दिया. जो हमारे किसी काम के न थे। दहेजों के मिले बर्त्तन थे. जो चाची एक संदूक मे रखे सड़ाये जा रही थी। पूरे रास्ते भर वो बस की एक हैन्डल पकड़े खड़ा रहा। मेरे बगल की सीट कई बार खाली भी हुई। मैने उसे आवाज भी दी. पर वो न आया।

बनारस मे भी बड़ी मुश्किल से वो मेरे खाने के सौ रूपये पकड़ता थाःभईया!आप क खुराक त एक चिरई क ह। पईसा मत दा। चार ठे जूता मार ला मुझे अन्तरतम तक झकझोर जाती थी। जब तब वो पनामा सिगरेट की पैकेट लिए हॅाथ जोड़े मेरे सामने खड़ा हो जाता थाःगरीब क भेंट ह।

ये जीऊत मेरे लिए एक प्रश्नचिन्ह बनता चला जा रहा था। आखिर वो अपनी पत्नी को गॅाव मे छोड़कर बनारस मे दो पैसे ही जोड़ने के लिए टिका है जिसकी उसके पास कोई कद्र ही नही है। नौ सौ रूपये मे हम साढों को पाले जा रहा है। क्या बचता होगा बेचारे के पास!बनारस मे उसे कौन रोक रखा है!क्या रोक रखा है!ये प्रश्नचिन्ह मेरे सामने दिन ब दिन गाढा होता चला जा रहा था।

दोपहर की रसोई दो बजे उठ जाती थी. फिर भी वो मेरा खाना गर्म रखता था और मेरा इन्तजार करता रहता था। शाम का खाना मना करने और करवाने के बावजूद वो मेरा खाना लिए मेरे कमरे तक चला आता था। ना नुकूर के बावजूद मुझे एकाध रोटी खानी ही पड़ती थी।

गल्ले के लिए वो कभीं कभार ही अपने गॅाव जाता था. ज्यादेतर या अक्सर उसकी पत्नी ही गल्ले बनारस पहॅुचा जाती थी। तेल नमक मसाले वो नरायनपुर के एक बनिये रामजनम से खरीदता था. जो उसका एकमात्र दोस्त भी था। सब्जियॅा वो मड़वाडीह की सब्जीमंडी से लाता था। शाम के खाने पर हमें बस रोटी और एक रस्सेदार सब्जी मिलती थी। होली और दीवाली पर हमे उसे बीस रूपये अतिरिक्त देने पड़ते थे।

होली के दिन वो रंग गुलाल से नहाया मीट और पूरियॅा बनाता था। इस दिन डट के भांग की ठंढई पीके लड़के गर्दन तक मीट जीमते थे। दीवाली पर वो खीर और पूरियॅा बनाता था।

पता नही वो हमारे नौ सौ रूपयों मे से कितना बचा पाता था!अपनी झोपड़ी का उसे किराया भी देना पड़ता था।

अपनी पत्नी से दूर शहर मे अकेला वो हमारी सेवा मे जी जान से जुटा रहता है। न ढंग के कपड़े. न रहने का कमरा. न कोई शौक न कोई नशा। मैने तो उसे कभीं कुछ खाते या फॅाकते भी न देखा। जब तब मै उसे कूरेदा भी करता थाःजीऊत!मारो गोली अपने चावल दाल को जब देखो अपना खाना दाना ले कर बैठ जाते हो। अपने बारे मे कुछ बताते ही नही। उसके पास हमेशा बस एक ही जबाब होता थाःहमरे पास बतावै लायक कुछ ना ह भई या। बस आप लोगन क सेवा ह।

सॅावले रंग और छरहरे बदन का जीऊत बोलता भी बेहद कम था।

एक बार रविवार के दिन मै बाबुलनाथ के साथ छत पर बैठा था कि अचानक गॅाव की उस गोरी लड़की को जीऊत की झोपड़ी की तरफ आते देखा। मै उठ कर खड़ा हो गया और ध्यान से इस झोंपड़ी की गतिविधियॅा देखने लगा। जीऊत उस लड़की के लिए खाना परोसे जा रहा था। जब वो लड़की खाना खाके उठी. जीऊत उसके हॅाथ से जूठे बर्त्तन ले कर लॉज के चांपे कल पर मॅाजने जा बैठा। वो लड़की अपनी झोंपड़ी की तरफ बढ चली। मेरे बगल मे खड़ा बाबुल नाथ खड़ा मुसकियाये जा रहा था। जब मै उसकी और देखा तो कुटिलता उसके चेहरे पर और सघन हो उठी ःइस लड़की मे किसी ऊॅची जात का खून है। अभीं तो ये दस ग्यारह साल की है। तीन चार साल के बाद ये बनारस को डोला के रख देगी। अनाथ है और ये जीऊता उसका संरक्षक और अंगरक्षक बने बैठा है। साला इन्तजार कर रहा है बईर के पकने का। जात का गोंड़ और सपना पाले है बहत्तर मील लम्बा।

बाबुलनाथ की बातों से मै थोड़ा क्षुब्ध तो हुआ. पर बिना जीऊत से बात किये मै उसके बारे मे कोई राय बनाना नही चाहता था।

ले गईल कऊआ कान सुनते ही मै कऊअे के पीछे भागने से पहले अपने कान पर हॅाथ रखा और शाम के खाने पर थोड़ा देर से गया।लॅाज के दूसरे लड़के खाना खा कर जा चुके थे।जीऊत रसोई के दूसरे काम निपटाये जा रहा था।मेरा खाना वो एक थाली मे डाल रखा था.जिसपर एक साफ धूली गमछी पड़ी थी।गमछी हटा कर वो मेरे सामने खाना रख गया।एकाध रोटी निगल कर मैने अपना सवाल दागाःइस गॅाव की गोरी लड़की से तुम्हारे क्या सम्बन्ध हैं जीऊत!अब तुम मुझसे ये न कहना कि हमरे पास बतावै लायक कुछ ना ह भईया।फिर ढूंढते रहना मुझे जीवन भर।

पहली बार जीऊत ने अपनी नजरे उठाई।ढिबरी की रोशनी मे भी मै उसकी ऑखो का आक्रोश देख सकता थाःठीक ह भईया त सुना ःइन कर नाम रूकमनि ह।इन कर माई विधवा कॅहारिन रहलीं।इ सामने वाले मकान क बी डी ओ साहब उन कर जमीन त हॅथिया ही लेलॅ अपने महल के बनावै के वास्ते.उन कर इज्जतो ना छोड़लं।उन कर दिन चढ गईल।रूकमनि के उ पइदा त कईलीं.तीन साल तक पोसली भीं फिर फंसरी लगाके मर गईलीं।बी डी ओ साहब उन कर जमीन हॅथिया के वगलै मे रूकिमनि के वास्ते एक ठे जीए मरै वदे झोपड़ीं बनवा के सरक गईलॅ।बनारस हम आईल त रहलीं पइसे कमावै वदे।इ लइकी आपन हॅाथ फइला फइला के पूरे गॅाव मे भीख मॅागत रहलीं।इ कुल इ गॅाव के एक एक जन के मालूम ह।आठ बरस हो गईल भईया।तव से लेके आज तक इनके सेवा मे लगल हई।पानी भरै से लेकर दो जून क खाना तक।इनके एक बार भी हम एक कटोरी तक मॅाजे के ना देली।

ःजीऊत!अभी तक तो ये बच्ची है।सम्हाले जा रहे हो।जब ये जवान होगी तब!बनारस का ताप तुम जानते नही हो क्या!इसे ले कर अपने गॅाव क्यो नही लौट जाते!

ःभईया!गॅाव क ताप ऐंइजा से कम ह का!

ःतो अपनी पत्नी को कम कम से कम बनारस बुला लो।

ःकहॅा से चुकाईव सात हजार रूपल्ली!बाबू आज से पनरह बरीस पहले बाबू साहब से पॅाच सौ रूपया करजा लेले रहलॅ।सूद वूद मिलाके अब उ सात हजार हो गईल ह।अब घरवाली के बन्धक बनाके बाबूसाहब दबोचले हऊंअ।

अब मै उसे कौन सी सलाह देता।बनारस का ताप वो खुद भी जानता था।

बनारस भी विस्तृत होते होते नरायनपुर से जा लगा था।उदय प्रताप कालेज के तमाम लेक्चरारों की नजर तो इस गॅाव पर थी ही.इसके अलावे भोजूवीर से इस गॅाव से हो कर जाने वाली सड़क पर धड़ाधड़ छोटी बड़ी दुकाने और गुमटियॅा खुलती जा रही थीं।बड़े बड़े गढों से भरी इस धूल धूसरित सड़क पर एकाध खटारा बसें भी चलने लगी थीं।इस सड़क की चहल पहल बढती ही जा रही थी।और बनारस मे पान की कोई दुकान खुली नहीं कि वहॅा रंगदारों का मजमा लगा नहीं।नरायनपुर प्रकाश मे आता चला जा रहा था।

जीऊत भी एक बहुत बड़ी जिम्मेवारी ले बैठा था।मै बनारस मे कुल दो वर्ष रहा।मेरे बनारस मे रहने के दौरान ही जीऊत के दुर्दिन शुरू हो गये थे।आए दिन उसका मुॅह सूजा ही रहता था।नरायनपुर की सड़क पर छिटपुट रंगदार उसे अकारण ही पीट देते थे।यहॅा तक कि लॅाज के लड़के डट कर उससे अपनी सेवा तो करवाते थे.पर उसका पीटना दर्शकों की तरह देखते रहते थे।इनमे से कोई भी बीच बचाव के लिए आगे न बढता था।

दो चार रंगदारों से मै व्यक्तिगत भी मिला और उनसे कहा भीःमै जीऊत को अच्छी तरह से जानता हूॅ।जात का वो गोंड़ तो है लेकिन बड़ा चरित्रवान है।आखिर उसकी गलती क्या है!क्या अपराध है उसका! बस यही न कि वो एक अनाथ बच्ची को अपना संरक्षण दे रखा है!तो तुममे से कोई जा कर उसे संरक्षण क्यों नही देता!पर हर बार मुझे यही सुनने को मिलाःसारे चमार क हिम्मत त देखा।एक नम्बर क माल हॅथिया के बईठल ह.अउर तू ओकर वकालत करत हऊआ।जा आपन पढाई लिखाई करा बच्ची।

बी एस सी का फाइनल एक्जाम मेरे सर पर था और मेरी तैयारी शून्य थी।मेरा संक्रमण मुझसे अभी तक चिपटा पड़ा था।साल भर मै दबा के क्लासें गोल किया।कभीं इस रिश्तेदार से मिलने गया तो कभीं उस रिश्तेदार से।पढाई से मेरा मन तो ऐसे भी उचटा हुआ था.ऊपर से मेरे आसपास रहने वाले लड़के भी एक नम्बर के गफलियावाज थे।गई रात तक गफलिया जमती थी।सब अपनी अपनी पूड़िया छोड़ते रहते थे।एक्जाम करीव आता जा रहा था।मै रोज ही सोचता था.कल से एकदम सिरियस हो जाऊॅगा।ये कल तो न आया लेकिन एक्जाम सर पर आ गया।ऊपर से जीऊत की सरदर्दी।

क्यों मै इस गोंड़ से टकराया! मेस का खाना भी क्या बुरा था।आये दिन मै अपने को कोसता था।

एक बार तो मै जीऊत पर झल्ला ही पड़ाःउठाओ अपना बम भोंसड़ा जीऊत और अपने गॅाव की ठौर लो।ये रूकमनि तुम्हारे वश की नही है।तुम्हे बनारस के लोग जिन्दा गाड़ देगे।ये उसकी आशाओं के विपरीत था.ये तो मै जानता था.लेकिन अपने हॅाथ मे कट्टा लेने का मुझे भी कोई शौक न था .जो उसके संरक्षण के लिए जरूरी होता चला जा रहा था।

बड़े नपे तुले शब्दों मे जीऊत का यही जवाब थाःत तूहूॅ सुन ला भईया! नरायनपुर से या त रूकमनि क बरात उठी या त हमार लास।

मैने अपना हॅास्टल छोड़ दिया और बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय के गुर्टु हॅास्टल मे अपने बड़े भाई के कमरे मे आ गया और वहीं से बी एस सी के एक्जामों मे आता रहा.जिसका नतीजा मुझे पहले से ही पता था।

मेरे दूसरे साथी फिर भी किसी तरह अपनी नईया थर्ड डिविजन मे निकाल ले गए और मै फेल हो गया।कौन सा मुॅह ले कर अब मै अपने मॅा बाप के पास जाता।मुझसे तो मेरा गॅाव तक छूट गया था।लगभग साल भर मै यहा वहॅा भटकता रहा।कभी इस दोस्त के यहॅा तो कभीं उस दोस्त के यहॅा।मेरे साथियों को बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय के विधि संकाय मे दाखिला मिल गया और एक तरह से वो सम्हल भी चले थे और गम्भीरता से अपनी पढाई मे लगे हुए थे।अब उनके पास गफलिया वगैरह के लिए समय न था।मै चौक पर एक पंडित जी के धर्मशाले मे मुफ्त मे रहने लगा जहॅा एक राम मन्दिर भी था।पन्डित जी हर रोज नहा धोकर पुजा पर बैठ जाते थे।मन्दिर मे चावल दाल और चोखे का रोज ही भोग चढता था।मै भी उनके साथ बैठकर खाना खा लिया करता था।

मै हर रोज तड़के सुबह गंगा स्नान करने जाने लगा तथा गेरूअे रंग की लुंगी और इसी रंग का कुर्त्ता पहनने लगा।सुबह नहा कर जब मै अपना खड़ाऊॅ चटकाता धर्मशाला वापस लौटता तो लोगों की नजरें मुझपर टिक जातीं।शाम के खाने के बाद मै गई रात तक मनिकणिका घाट पर बैठा लाशों का जलना देखता था।एक वैराग्य मुझमे आता जा रहा था।मुझ जैसे कम उम्र के वैरागी को देखकर लोग पूरी श्रद्धा से अपना सिर तो झुकाते ही थे यहॅा

तक कि कभी कभार गली मे मेरे पैरो के सामने गेंदे के फूल और सिक्के तक भी गिरते थे।मेरे मन की शान्ति वापस लौट चली थी।मुझमे किसी तरह का ऊहापोह न था और न मुझे अपने भविष्य की ही कोई चिन्ता थी।घर वाले मेरी तलाश कर कर के हार चले थे।

अचानक एक दिन मेरे एक रिश्तेदार की नजर मुझ पर पर पड़ गई।उसने मेरा पीछा धर्मशाला तक किया और फिर मेरे माता पिता को एक टेलीग्राम डाल दिया।शाम को मेरा मन बड़ा घवरा रहा था।घर वाले भी बहुत याद आ रहे थे।शाम का खाना भी मै बड़े अनमने ढंग से खाया।दूसरे दिन पूजा पाठ के बाद जब पंडित जी मेरे जी जवार के बारे मे पूछे तो मैने उनसे बिल्कुल स्पष्ट कहाःआप अपना मन मजबूत कर लीजिये।विदा का समय नजदीक आता जा रहा है।उनके हॅाथ का कौर हॅाथ मे ही धरा रह गया।

अब मै बाम्बे मेल से मॅा बाबूजी और भईया के संग धनबाद जा रहा था।रह रह कर पंडित जी का चेहरा मेरे ऑखो के सामने नाच जाता था।रो रोकर अपनी नाके पोंछ पोंछ कर वो अपनी गमछी सान लिए थे।

मेरा बी एस सी मे फेल होना और उसके बाद लापता हो जाना समय के साथ जगविख्यात हो चला था।चारो ओर मेरे नाम की थू थू हो रही थी जिसके छींटे मेरे मॅा बाप पर भी पड़ रहे थे।फिर भी अपनी तमाम निराशा एक ओर टाल कर वो मुझे पाकर बेहद खुश थे और मुझ पर अपना लाड़ प्यार लुटा रहे थे।मेरी मॅा के चौबीस घन्टे बस मेरी सुख सुविधा और निगरानी मे बितते थे।अब मुझे अपने तीन वर्षो की खाई किसी न किसी तरह पाटनी ही थी।

मेरे दोस्तो को उदय प्रताप कॅालेज की खाई पाटने मे वर्षो लग गये और मुझे तो अपना देश ही छोड़ना पड़ गया।मै मिनिस्ट्री ऑफ एजूकेशन एन्ड सोशल वेलफेयर की एक स्कॅालरशीप पर बायोफिजिक्स पढने सात वर्षो के लिए मास्को चला गया।

ऐसा भी न था कि इन सात वर्षो मे मुझे जीऊत की याद न आई हो।जब तब रूकमनि की भी याद आती थी।एक बात तो मेरे सामने बिल्कुल स्पष्ट थी कि बनारस ने इनका भयावह भविष्य पूर्व निर्धारित कर रखा था।

मास्को से वापस आने के बाद मेरा बनारस जाने का संयोग बना।अब मुझमे कोई झिझक न थी।मेरे पास विदेश मे अर्जित किया डिपलोम था।हर जगह मुझे बड़ा आदर सम्मान मिल रहा था।

बनारस से मुझे कई लोग जोड़ रखे थे.जिनमे धर्मशाले के पंडित जी और जीऊत मूख्य थे।पंडित जी का देहान्त हो गया था और धर्मशाले मे एक दूसरे पंडित जी आ गए थे।उन्ही से मै थोड़ी बहुत बातचीत करके बड़े भारी मन से वापस लौट आया।

दूसरे दिन मै सुबह ही नरायनपुर जा पहुँचा।नरायनपुर की सड़क बिल्कुल पक्की हो चली थी.जहॅा सिर्फ बताशे जलेबियों की ही दुकाने न थी।कपड़े लत्ते.दर्जी.ढंग के ढाबे हलवाई सब वहॅा आ गए थे।बी डी ओ साहब का मकान तो कब का बन चुका था।लॅाज की दीवारों पर भी पलस्तर चढ गए थे।आधे से ज्यादे गॅाव मे पक्के मकान बन गए थे और बन रहे थे।जिधर देखो उधर ही संगमरमर की तख्ती पर फलाना सिंह एम एस सी.फलाने तिवारी एम ए नजर आते थे।जीऊत और रूकमनि की झोपड़ियॉ गायब थीं।मुझे इस गॅाव मे एक भी औरत माला गूँथते न दिखी।हॅा कई छतो पर सभ्रान्त घरों की सभ्रान्त महिलायें अरगनी पर कपड़े फैलाते अवश्य दिखीं।पूरे गॅाव मे बस दस बीस झोपड़ियॉ शेष बची थीं।

दो चार लोगों से मैने जीऊत के बारे मे पूछा।उसके बारे मे तो मुझे कुछ पता न चला.पर रामजनम बनिये के दुकान का पता मुझे मिल गया।मै उसकी दुकान पर जा पहुँचा।उसकी दुकान दुकान नही एक बन्द अन्धेरी कोठरी थी.जिसका दरवाजा किसी खिड़की से बड़ा न था।झुक कर मै दुकान मे घूसा जो कड़ुआ तेल और तम्बाकू के मिश्रित गन्ध से भरी पड़ी थी।दिन के समय मे भी एक ताखे पर ढिबरी जल रही थी।गल्ले पर एक भरे पूरे बदन की सॅावली औरत छींट की चोली और एक मटमैले रंग की साड़ी पहने बैठी थी.पसीने मे नहाये।यहॅा तक कि उसके कॅाख के घास तक नजर आ रहे थे।मुझे देखते ही झटपट वो न सिर्फ अपना खुला बदन बल्कि अपना सर तक ढॅकने लग पड़ी।रामजनम एकाध बार मुझे देखा था।अब पता नही उसे मेरा नाम याद भी था या नही.पर उसकी पत्नी को मैने अपना नाम बताकर ही परिचय दिया।वो एक बोरे का पर्दा हटाकर एक दूसरे बील मे ॲड़स गई और मै दुकान के बाहर आ गया।थोड़ी ही देर मे दुकान के बगल से रामजनम नंगे बदन अपने गमछी की गांठ बॅाधते आता दिखा।

वो मुझे दूर से ही पहचान लिया था।बड़े आदर से मिला और मेरा हॅाथ थामे दुकान के पिछवाड़े अपने घर के बरामदे मे लिवा गया और बैठने के लिये एक बॅसहटी बिछा दी।फिर वो घर के अन्दर जाकर दो बईना भी ले आया।अभी इधर उधर की बाते हो ही रही थी कि उसकी पत्नी एक लम्बे घूँघट मे हमे एक लोटे मे चाय भर कर साथ मे दो फूल के ग्लास भी दे गई।जीऊत का प्रसंग आते ही रामजनम दायें बायें झॅाकने लगा फिर वो अपनी दबी नकियाती जबान मे मुझे जीऊत के बारे मे आद्योपान्त सुनायाः

मेरे बनारस मे रहने के दौरान ही नरायनपुर की सड़क पर आए दिन कोई न कोई उसे पीट देता था।जीऊत महीनो तक चुपचाप पीट कर घर वापस आ जाता था और सूजे मुँह अपने खाने पीने की तैयारी मे लग जाता था।वो सब कुछ सहता रहा।एक दिन उसने अपना संतुलन खो दिया और अपना हॅाथ छोड़ बैठा।आसपास के रंगदार चौंके।जीऊत भी एक कट्टा कहीं से खरीद लाया।रामजनम कई बार उसे सलाह भी दिया कि खरीद फरोख्त के लिए वो उदय प्रताप कॅालेज के एग्रिकल्चर फार्म वाला रास्ता क्यों नही लेता!लेकिन उसने साफ मना कर दिया।गॅाव और रूकमनि को न छोड़ने के उसके अडिग फैसले को तो मै भी जानता था।छीटपूट मार पीट चलती रही.पर रूकमनि के झोपड़ी तक आने की हिम्मत किसी ने न की।एक दिन सड़क पर किसी एक ने रामजनम की तोंद मे भी कट्टा घूसेड़ दिया।रामजनम इसका मतलब एक पल मे समझ कर गिड़गिड़ा कर माफी मॅागने लगा।उसने जीऊत से अपने सारे सम्बन्ध तोड़ लिए।भय बनिया बाम्हनो का सदा से आभूषण ही न रहा बल्कि उनकी योग्यता भी रही है।जीऊत का मेस बन्द हो गया.लेकिन वो नरायनपुर न छोड़ा और न अपनी झोपड़ी ही छोड़ी।वो एक साये की तरह रूकमनि के आसपास मंडराता रहा।

एक दिन उसे गिरफ्तार कर लिया गया।पहले तो अर्दली बाजार पुलीस थाने के सिपाही उसे नरायनपुर मे जम कर कूटे.उसे अधमरा बना कर उसके बाल मुंड़वाये.उसके चेहरे पर कालीख और चूना पुतवाये फिर उसे एक गदहे पर बिठा कर थाने तक उसका जलूस भी निकाले।थाने के सामने उसे गदहे से उतार कर जमीन पर पटक दिये।अधमरा जीऊत जमीन पर पड़ा था और थाने के सिपाहीयों के कहने पर भींड़ मे जमा छोटे छोटे बच्चे उस पर पेशाब किये जा रहे थे।जीऊत को जेल न भेजा जा सका।उसे कबीरचौरा अस्पताल मे भर्ती करवा दिया गया और उस पर पहरा बिठवा दिया गया।महीनो वो इस अस्पताल मे सड़ता रहा।उसकी पत्नी उससे एक बार भी मिलने न आई।रामजनम जीऊत से अपने सारे सम्बन्ध तोड़ने के बावजूद

अलग अलग स्रोतों से जीऊत के आसपास की खबर रखता था।जीऊत की पत्नी काश्तकार साहब की रखैल बन गई थी।काश्तकार साहब की पत्नी अपने सात बच्चों के जनने के बाद ढीली पड़ चुकी थी और अगले को साठा मे पराठा का स्वाद आ रहा था।जीऊत की पत्नी को अब बिन्दी टिकुली के लिए बनारस आने की जरूरत न रह गई थी।उसे एक सरपरस्ती मिल गई थी।छोटे जात के मरद तो बस मार पीट का भय ही दिखा कर अपनी पत्नियों को कब्जे मे रखते हैं.इसका भी उसे कोई भय न रहा।
रूकमनि अभी चौदह बरस की भी न हुई थी कि अचानक वो लापता हो गई।उसके बारे मे सौ मुँह तो सौ बातें.पर उसे भोजूबीर के नामवर रंगदार जनक सिंह उठवा लिये थे.हर एक की जुबान पर था।जीऊत भी अस्पताल से लापता हो गया।पुलिस की एक टुकड़ी उसके गॉव मे भी भेजी गई।दो पुलिसिये रामजनम की दुकान पर भी आये और मुफत की बिड़ी बन्डलों के हिसाब से ले गए।जीऊत का कोई सुराग न मिला।
ससुर गोंड़ कहीं मर खप गया होगा.सोच कर अर्दली बाजार के थानेदार ने उसकी फाईल बन्द कर दी।
कुछ अरसे के बाद आए दिन उत्तर प्रदेश के दैनिक आज मे डकैतियों की खबरे आने लगी।समय के साथ बनारस.मिर्जापुर और गाजीपुर मे एक दहशत सी फैल गई।इस नये उभरे डकैत की कोई शिनाख्त ही पुलिस को नही मिल पा रही थी।कान तक एक भेंड़ की कम्बल ओढे.नंगे पॉव जब वो अपने गिरोह के साथ किसी ठाकुर साहब के दालान मे कदम रखता था तो उनकी घिघ्घी बँध जाती थी।कम्बल के नीचे छुपे दुनाली निकालने की उसे जरूरत ही नही पड़ती थी।बिना किसी खून खराबे या बलात्कार के लाखो रूपयों की डकैतिया पड़ चुकी थीं और पड़ती जा रही थीं।गर्मी के दिनों मे एक भागलपुरी चादर और ठंढ के दिनो मे एक काली कंबल ओढे ये डकैत बनारस.मिर्जापुर और गाजीपुर के नामवर ठाकुरों और ब्राम्हणों के लिए अच्छा खासा सरबत्था बन गया था।शादी ब्याह तक उसकी बजह से टाले जा रहे थे।शादी ब्याह के अवसरों पर दहेज के साथ साथ वो बारातियों और घरातियों के लंगोटे तक खुलवा जाता था।इन तीन जिलों की पुलिस को उसका कोई सुराग ही न मिल रहा था।
एक दिन गाजीपुर की एक बस मे यही डकैत सशस्त्र बिना गिरोह के कहीं जा रहा था।एक गमछी से उसने अपना चेहरा छुपा रखा था।उसके बगल मे एक सौना गॉव का चमार जा बैठा और बैठते ही अपनी बीड़ी सुलगाई।मना करने के बावजूद भी उसने अपनी बीड़ी न बुझाई।बात बहस तोहरे महतारी तक जा पहुँची और दोनो एक दूसरे से गूंथ गए।ड्राइवर को बस रोकनी पड़ गई।दोनो गुत्थम गुत्था बस के बाहर आ गए।बस से दस बारह लोग भी बाहर आकर ये मल्लयुद्ध देखने लग गए।अचानक उस डकैत का सिक्सर सरक कर जमीन पर आ गिरा।लोग बाग चौंके और अपनी लाठी गोजी से उसे कूचने लगे।एक साथ दस दस गोजियों का मार ये डकैत न सह सका।लोग बाग उस डकैत को ठीक ठाक गूंथ कर बस मे आ चढे।बस आगे बढी और पास के एक थाने पर रपट लिखवा कर बनारस की तरफ रेंगी।
पुलिसवालो को इस डकैत के नाम पर धूल और खून से सनी हाड़ मांस की बस एक ढेर मिली।इस लाश की शिनाख्त बनारस मे हुई।ये जीऊत था।
नाम से तो तो वो हिम्मती था ही.पर इतना हिम्मतवर और चरित्रवान डकैत इन अंचलों मे न पहले कोई था.न बाद मे कोई आया।उसे किसी भी बात का लालच न था।न तो पैसों का.न किसी हैसियत का।उसे बस ऊँची जात वालों को एक ही बात समझानी थीःहिम्मत और दिलेरी सिर्फ उन्हे अमानत मे नही मिली है।
इस आकंठ कर्ज मे डूबे गरीब गोंड़ का आखिर अपराध क्या था!सब कुछ उससे छीन लिया गया।उसकी पत्नी.उसकी बच्ची.उसके सपने.उसका जीवन।वो सब कुछ हार कर चला गया।
शिव के त्रिशूल पर बसा ये काशी.तदनन्तर वरूणा और अस्सी के वाराणसी की सिर्फ गलियॉ ही तंग नही हैं।कब जगेगा ये चमर चमर चमरौंधा बोले झरकत लाल लन्गोटा वाला काशी.जिसमे हर जीवन संदेश देने की क्षमता है और वो आज तक बस अपना लंगोटा ही झरकाये जा रहा है।

प्रमोद कुमार सिंह